अहिल्याबाई

वीणा शिवपुरी

चौंडी एक छोटा-सा गांव महाराष्ट्र प्रदेश के औरंगाबाद ज़िले में। इस गांव के पटेल थे मानकोजी शिंदे। सन् 1725 में मानको जी की पत्नी सुशीला बाई ने एक बेटी को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया अहिल्याबाई। बचपन से ही वह बड़ी सुशील और धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। घर पर ही पिता ने उसे थोड़ा बहुत लिखना-पढ़ना सिखाया।

एक दिन (जब वह नौ साल की थीं) हमेशा की तरह शाम को आरती के समय शिव मंदिर गई। वहां संयोग से मालवा प्रदेश के सूबेदार मल्हार राव होल्कर भी मौजूद थे। उन्होंने इस बच्ची को देखा और उसके चेहरे की शांति और तेज से बड़े प्रभावित हुए। उन्हें अहिल्या के व्यक्तित्व में बड़े गुण नज़र आए। उनके मन में इस बच्ची को अपनी बहू बनाने का विचार आया।

> अहिल्याबाई का जीवन चरित्र आज की कर्मठ औरतों के लिए भी उतना ही आदर्श है जितना दो सदी पहले था। उनका जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार' का प्रतीक था।

मल्हार राव खुद बहुत बुद्धिमान और प्रतापी शासक थे, परन्तु उनका इकलौता बेटा खांडो जी लाड़-प्यार में बिगड़ गया था। वे एक ऐसी बहू की तलाश में थे जो उनके भटके हुए बेटे को सही रास्ते पर ले आए। अहिल्याबाई को देख कर उनकी तलाश पूरी हो गई। बड़ी धूमधाम से अहिल्याबाई का विवाह हुआ।

पत्नी अहिल्या

ससुराल में अहिल्याबाई ने अपने अच्छे व्यवहार और मधुर वाणी से सबका दिल जीत लिया। अहिल्याबाई का पति खांडेराव क्रोधी, हठी और विलासी था। शीघ्र ही वह अपने पति के स्वभाव को पहचान गईं। उन्होंने धीरे-धीरे अपने पति का दिल भी जीत लिया। इस तरह से खांडेराव में भी परिवर्तन आने लगा। वह राज काज की ओर ध्यान देने लगा। वह अब शस्त्र-कला का अभ्यास करता। युद्धों में भाग लेता। इस परिवर्तन से अहिल्याबाई के सास-ससुर बहुत प्रसन्न हुए।

मल्हार राव होल्कर पूना के पेशवा का प्रमुख सेनापति और मालवा प्रदेश का सूबेदार था। उन्हें अपनी सेना लेकर इधर-उधर कर वसूलने और युद्ध करने जाना पड़ता था। पीछे से उनकी बुद्धिमति पत्नी गौतमा बाई राजकाज संभालती थीं। अपनी सास के साथ अहिल्या बाई ने सिर्फ राज काज ही नहीं युद्ध कार्य भी सीखा। वे अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी माहिर हो गईं। कई बार मल्हार राव उन्हें लड़ाइयों में अपने साथ ले जाते थे। उन्हें अपने बेटे से ज़्यादा बहू की योग्यता पर भरोसा था।

समय बीतता रहा। होल्कर परिवार की सुख-समृद्धि दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही थी। अहिल्या बाई के घर एक पुत्र जन्मा जिसका नाम रखा गया मालेराव। दो वर्ष बाद एक बेटी मुक्ताबाई पैदा हुई। उनका घर-आंगन खुशियों से भर गया।

एक बार मल्हार राव भरतपुर के राजा सूरजमल

जाट से कर वसूलने गए। उन्होंने मराठा सेनापति को कर देने से इन्कार कर दिया। कुंभेर के किले पर युद्ध शुरू हुआ। मल्हार राव और खांडेराव युद्ध का संचालन कर रहे थे। अहिल्याबाई भी सेना के लिए रसद, गोला बारूद की देखभाल कर रही थीं। एकाएक कुंभेर की ओर से छोड़ा गया तोप का गोला गिरा और खांडेराव की मृत्यु हो गई। मल्हार राव और अहिल्याबाई पर तो आसमान टूट पड़ा। युद्ध रुक गया। अठारहवीं शताब्दी के भारत में सती-प्रथा प्रचलित थी। अहिल्याबाई ने सती होने का निर्णय लिया। यह सूचना मल्हार राव पर गाज की तरह गिरी। उन्होंने रो-रोकर अहिल्याबाई से कहा– "अब तू ही मेरा बेटा है। तेरे भरोसे मैं जी लूंगा। अहिल्या तू हम सबको अनाथ करके मत जा।"

अहिल्याबाई ने शांत मन से विचार किया। अगर वह सती हो जाएगी तो समाज में उसे आदर मिलेगा, लेकिन पूरा राज्य तहस-नहस हो जाएगा। उसकी जनता की देखभाल करने वाला कोई न रहेगा। यही सब सोचकर उसने सती होने का फ़ैसला बदल दिया।

अब अहिल्याबाई ने सारे राजसी सुख त्याग दिए। उनके जीवन का उद्देश्य जनता की सुख सुविधा का ध्यान रखना बन गया। मल्हार राव अब भी युद्धों में व्यस्त रहते थे। अहिल्या उनके पीछे पूरा राज काज संभालती थीं। वे अपने नाम से दूर-दूर के राज्यों से पत्र व्यवहार करती थीं। उनकी कार्य कुशलता की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी थी। उन्होंने तीर्थ यात्राओं और युद्धों के ज़रिए बहुत दूर-दूर तक भ्रमण किया था। जहां की पूरी जानकारी उन्हें थी।

मुश्किलों का दौर

पति की मृत्यु का घाव तो भरा नहीं था कि कुछ वर्षों बाद उनके पिता समान ससुर मल्हार राव का भी स्वर्गवास हो गया। दादा की मृत्यु के बाद पोता मालेराव गद्दी पर बैठा, लेकिन वह एक कम उम्र और अयोग्य व्यक्ति था। वास्तव में अब अहिल्याबाई अपने सेनापति तुकोजी के सहयोग से राजकाज चलाती थीं। अहिल्याबाई ने अपने बेटे को सही राह पर लाने की बहुत कोशिशें की। मालेराव सुधरा तो नहीं, लेकिन बाईस साल की उम्र में ही बीमारी से मर गया। अहिल्याबाई का मन एक बार फिर इस दुनिया से उचट गया, लेकिन फिर अपने राज्य और जनता का ख्याल कर के वे अपने काम में जुटी रही।

अहिल्याबाई के पूरे जीवन में एक के बाद एक कई बार दुख पड़े। उनकी पुत्री मुक्ताबाई का विवाह एक वीर युवक यशवंत के साथ हुआ। उनके घर में एक पुत्र भी जन्मा। अहिल्याबाई बड़ी प्रसन्न हुईं, परन्तु उनका नाती बचपन में ही मर गया। चार साल बाद जंवाई यशवंत का भी देहान्त हो गया। पति की मृत्यु पर मुक्ताबाई सती हो गई। एक साथ इतने दुख पड़ने पर कोई भी साधारण व्यक्ति अपना संतुलन खो देता, परन्तु अहिल्याबाई किसी फौलाद से कम नहीं थीं।

महारानी अहिल्याबाई होल्कर

बेटे की मृत्यु के बाद जब लालची जमींदार उनके राज्य की ओर नज़र उठाने लगे तो उन्होंने एलान करवा दिया कि उन्होंने सत्ता संभाल ली है। हालांकि अब तक भी वे ही राजकाज चलाती थीं, पर अब वे सिंहासन पर बैठी। उनकी जनता बहुत प्रसन्न हुई। उनके जीवन का यह भाग बहुत महत्वपूर्ण था।

राघोबा पेशवा नाम के एक छुटभैया पेशवा ने अहिल्याबाई पर हमला करके उनका राज्य हड़पने की सोची। अहिल्याबाई ने अपनी सेना की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने अपनी निगरानी में स्त्रियों की एक सेना भी तैयार कराई। अहिल्या बाई ने राजनीतिक सूझ-बूझ भरा एक पत्र राघोबा को भिजवाया। इसमें लिखा था– "आपने अबला समझकर मेरे राज्य को हड़पने की सोची है। मैं कैसी हूं इसका पता आपको युद्धभूमि में लग जाएगा। एक बात याद रखिए मैं हार गई तो कोई कुछ नहीं कहेगा, लेकिन यदि आप मुझसे हार गए तो कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। इसका विचार करके लौट जाने में ही आपका फ़ायदा है।" राघोबा ने लड़ाई का विचार त्याग दिया।

अहिल्याबाई ग्वालियर के महादाजी सिंधिया का बहुत आदर करती थीं, परन्तु एक बार उन्होंने अपने किसी राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए अहिल्याबाई को धमकी दी "बाई साहब हम पुरूष हैं। हमने मन में धार लिया तो आप पर क्या बीतेगी। यह सोच लो।" यह सुनते ही अहिल्याबाई गरज उठीं "जैसे तुम अपने घर की स्त्रियों को सुपारी का टुकड़ा समझ कर चबा जाते हो वही मुझे समझा है। जिस दिन इन्दौर पर तुम्हारी फौज कूच करेगी उसी दिन हाथी के पांव की सांकल से बांधकर तुम्हारा स्वागत करूं तभी मल्हार जी होल्कर की बहू कहलाऊं।"

उनके इन शब्दों से उनकी बहादुरी, आत्म सम्मान और ताक़त झलकती है। जहां एक ओर अहिल्याबाई इतनी वीर और मज़बूत थीं वहीं अपनी जनता के लिए उनका दिल मक्खन से भी नरम था। पहले जब भी कोई निसंतान विधवा कोई बच्चा गोद लेना चाहती थी तो उसे काफ़ी धन-सम्पत्ति राज्य को देनी पड़ती थी। अहिल्याबाई ने कहा-यह तो अन्याय है। जो धन उसके पति ने कमाया, उस पर उसका पूरा अधिकार है। उसे बच्चा गोद लेने का भी पूरा हक़ है। उन्होंने अपने राज्यकाल में सैंकड़ों कुएं, बावड़ियां, सराय, सड़कें, मंदिर बनवाए। वे खुद नर्मदा नदी के किनारे एक साधारण से घर में रहती थीं। उनका जीवन 'सादा जीवन उच्च विचार' का प्रतीक था। उन्होंने कभी पर्दा नहीं किया। वे राज दरबार में बैठकर सारे काम खुद करती थीं। घोड़े पर सवार होकर युद्ध संचालन करती थीं। उनका राज्य राजस्थान मध्य प्रदेश महाराष्ट्र के कई हिस्सों तक फैला हुआ था।

वे सन् 1734 में ब्याहकर होल्कर परिवार में आई थीं। 1795 तक की लम्बी उम्र तक वे उसी निष्ठा और मुस्तैदी से काम संभालती रहीं। उनके आत्मीय जनों की मृत्यु ने उन्हें भीतर से तोड़ दिया था। सत्तर वर्ष की पकी आयु तक राज्य करने के बाद उन्होंने अपने प्रिय शहर महेश्वर में प्रिय नदी नर्मदा के किनारे प्राण त्याग दिए।

अहिल्याबाई का जीवन चरित्र आज की कर्मठ औरतों के लिए भी उतना आदर्श है जितना दो सदी पहले था। □